शिक्षक - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 02-11-2020, वर्ग - MA-II

परिणाम सिद्धान्त का नगदी-शेष कैम्ब्रिज समी० (Cash Balances Version of Quantity Theory)

बीसवी सदी मे कुछ अंग्रेज अर्थशास्त्रियो ने, मार्शल के नेतृत्व मे परिणाम सिद्धान्त का थोड़ा भिन्न संस्करण लोकप्रिय बनाया। इन अर्थशास्त्रियों में विशेषकर पीगू, रोबर्टसन और कीन्स, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से सम्बन्धित थे। अतएव इस सिद्धान्त को कैम्ब्रिज सिद्धान्त या नकदी-शेष (Cash Balance) भी कहते है।

कैम्ब्रिज सिद्धान्त के अनुसार मुद्रा का मूल्य (या मूल्य स्तर) मुद्रा की मांग पर निर्भर करता है। पर मुद्रा की माँग लेन-देन उद्देश्यों के लिये नही किया जाता है। बल्कि मूल्य के संचय (Store of value) के उद्देश्य से की जाती है। अब मुद्रा की मांग बढ़ेगी तो लोग वस्तुओं तथा सेवाओं पर खर्च

छोटा देगें ताकी उनके पास अधिक मात्रा में नकदी रहे। इससे वस्तुओं तथा सेवाओं की मांग बढ़ जायेगी परिणामस्वरूप कीमत स्तर गिर जायेगा जिससे मुद्रा का मूल्य बढ़ जायेगा दूसरी ओर मुद्रा की मांग गिरने से कीमत स्तर बढ़ेगा और मुद्रा का मूल्य कम हो जायेगा।

(1) मार्शल का समीकरण —

$$M = PKY$$

जहाँ —

M = लोगों के पास मुद्रा के परिमाण

P = कीमत स्तर

Y = वास्तविक आय (Real income)

K = वास्तविक आय का अंश जिसे लोग नगदी में रखना पसंद करते हैं।

इस समीकरण से स्पष्ट है कि मुद्रा का मूल्य (अर्थात कीमत) नकदी के रूप में रखे जाने वाले द्रव्य की मांग

पर निर्भर होता है।

(2) पीगू का समीकरण ⇒ (Pigou's Equation)

पीगू ने नगदी शेष सिद्धान्त को समीकरण के रूप में निम्न प्रकार से व्यक्त किया है —

$$P = \frac{KR}{M}$$

जहाँ P = मुद्रा की क्रय शक्ति अथवा मुद्रा का मूल्य

K = राष्ट्रीय आय का अंश, जिसे जनता नकदी के रूप में अपने पास रखना चाहती है।

R = राष्ट्रीय आय या समाज के समस्त साधन (resources)

M = वैध मुद्रा की वास्तविक मात्रा

पीगू के अनुसार मुद्रा की मांग के अन्तर्गत केवल वैध मुद्रा अथवा नकदी

नही आती बल्कि बैंक नोट तथा बैंक शेष भी आते है। बैंक नोटो तथा बैंक शेषों को मुद्रा की मांग मे सम्मिलित करने के लिए पीगू ने अपने समीकरण को संशोधित रूप इस प्रकार प्रस्तुत किया—

$$P = \frac{KR}{M}\{c + h(1-c)\}$$

जहाँ -

c = लोगो द्वारा वैध मुद्रा एवं प्रतीक सिक्को के रूप मे वास्तव मे गई कुल वास्तविक आय का अनुपात है।

(1-c) = बैंक नोटों तथा बैंक शेषों का अनुपात है।

h = वास्तविक ~~शेष~~ वैध मुद्रा का वह अनुपात है जिससे बैंक अपने ग्राहको ~~का~~ द्वारा धारित नोटों तथा शेषों के मुकाबले रखते है।

पीगू के अनुसार जब समीकरण $P = KR/M$ में K तथा R को स्थिर मान लिया जाता है तो यह समीकरण

आयताकार अतिपरवलय (Rectangular Hyperbola) के रूप में वैध मुद्रा का मांग वक्र प्रदान करता है। इसका मतलब यह है कि मुद्रा की मांग वक्र लोच एक के बराबर होता है।